#### Quick word tests

तरक़्क़ी	तरक़्क़ी	आह्लाद	आह्नाद	फ्रीज	फ्रीज	मग्ज	मग्ज	हृत्स्थल	हत्स्थल	सिर्फ	सिर्फ
ज़्यादा	ज़्यादा	ब्राह्मण	ब्राह्मण	ह्रितिक	ह्रितिक	सम्यग्ज्ञान	सम्यग्ज्ञान	ज्योत्स्रा	ज्योत्स्ना	व्हिस्की	व्हिस्की
मन्ज़ूर	मन्जूर	मिस्त्री	मिस्त्री	एल्ज़े	एल्ज़े	दिग्दर्शन	दिग्दर्शन	ईषत्स्पृष्ट्	ईषत्स्पृष्ट्	इश्क	इश्क
इलेक्ट्रान	इलेक्ट्रान	दुष्प्रह्य	दुष्प्रह्य	उत्त्य	उत्त्य	पंक्ति	पंक्ति	उत्स्रुत	उत्स्रुत	प्रश्न	प्रश्न
स्ट्रीटकार	स्ट्रीटकार	अद्भुत	अद्भुत	उत्य	उत्य	मंगलवार	मंगलवार	सद्गति	सद्गति	रुश्द	रुश्द
छुट्टी	<u> </u>	इल्ज़ाम	इल्जाम	रत	रत्न	दुर्लंघ्य	दुर्लंघ्य	सद्गन्थ	सद्ग्रन्थ	वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य
महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अक्षरे	अक्षरे	सज़्स	सज़्स	पच्चीस	पच्चीस	उद्घाटन	उद्घाटन	ओष्ठ्य	ओष्ठ्य
ज्येष्ठ	ज्येष्ठ	ज्ञान	ज्ञान	एज्जा	एज्जा	अच्छा	अच्छा	ज़िद्दी	ज़िद्दी	मिस्त्री	मिस्त्री
दर्ष्टांत	दर्षांत	मौके	मौके	ब्यर्थे	ब्यर्थे	उज्र	<b>उ</b> ज्ज	प्रसिद्ध	प्रसिद्ध	आह्वान	आह्वान
चिट्ठी	चिट्ठी	कैंटोमेंट	कैंटोमेंट	तरक़्क़ी	तरक़्क़ी	संस्कृत	संस्कृत	उद्बोध	उद्बोध	आह्लाद	आह्नाद
वाङ्मय	वाङ्मय	छूट कुछ	छूट कुछ	फ्रैक्चर	फ्रैक्चर	हिंस्र	हिंस्र	द्रव	द्रव	ह्रास	ह्रास
वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य	करेंट	करेंट	डॉक्टर	डॉक्टर	छुट्टी	<b>छ</b> ट्टी	दारिद्य	दारिद्र्य	अंकुड़ा	अंकुड़ा
पुनस्स्थापना	पुनस्स्थापना	राष्ट्रून	राष्ट्रून	इलेक्ट्रॉन	इलेक्ट्रॉन	चिट्ठी	चिट्ठी	अध्रुव	अध्रुव	अंतर्निहित	अंतर्निहित
स्वास्थ्य	स्वास्थ्य	कॉफी	कॉफी	रक्त	रक्त	विशाखपट्नम	विशाखपट्नम	मंज़ूर	मंज़ूर	अन्तः	अन्त:
कम्प्यूटर	कम्प्यूटर	हिंदू-मुस्लिम	हिंदू-मुस्लिम	वक्त	वक्त्र	ट्रैन	ट्रैन	मंत्री	मंत्री	अंतर्वेशन	अंतर्वेशन
सान्ध्य	सान्ध्य	करणाऱ्या	करणाऱ्या	युक्त्यभास	युक्त्यभास	सुपाठ्य	सुपाठ्य	स्वातंत्र्य	स्वातंत्र्य	अग्नि	अग्नि
इ्ज़त	इज़्जत	स्रेह	स्नेह	वक्फ़	वक्फ	लड्डू	लड्ड	द्वंद्व	द्वंद्व	अद्भुत	अद्भुत
उज्ज्वल	उज्ज्वल	श्री	श्री	शुक्ल	शुक्ल	ब्रह्मण्य	ब्रह्मण्य	उन्नीस	उन्नीस	छुछुंदर	छुछंदर
प्राप्त्याशा	प्राप्त्याशा	स्त्री	स्त्री	रिक्शा	रिक्शा	उत्क्रम	उत्क्रम	इंस्टिट्यूट	इंस्टिट्यूट	हुंकार	हुंकार
इकत्तीस	इकत्तीस	ध्ड्यां	ध्ड्यां	पक्ष	पक्ष	उत्क्षेप	उत्क्षेप	उन्हें	उन्हें	हित इच्छुक	हित इच्छुक
सत्रह	सत्रह	शक्ति	शक्ति	लक्ष्मी	लक्ष्मी	विद्युत्प्रहक	विद्युत्प्रहक	दीन्ह्यो	दीन्ह्यो	कुर्री	कुर्री
पद्म	पद्म	महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अभक्ष्य	अभक्ष्य	महत्त्व	महत्त्व	नैप्स्यून	नैप्स्यून	कुल्हिया	कुल्हिया
विद्यार्थी	विद्यार्थी	कटू	कटू	दिक्स्थापन	दिक्स्थापन	पत्थर	पत्थर	प्राप्त	प्राप्त		
उन्नीस	उन्नीस	रूप	रूप	सख़्त	सख़्त	विद्युत्दर्शी	विद्युत्दर्शी	सब्ज़ी	सब्जी		
पश्चिम	पश्चिम	्रहरू	हूँ	अख्त्यार	अख्त्यार	पत्नी	पत्नी	छब्बीस	छब्बीस		
श्रीलंका	श्रीलंका	बुत्तो	बुत्तो	ज़ख़्म	ज़ख़्म	सपत्य	सपत्न्य	मार्किट	मार्किट		
विश्वविद्यालय	विश्वविद्यालय	बार्गी	बार्गी	ख्रिष्टां	ख्रिष्टां	उत्प्रवास	उत्प्रवास	दुर्ज्ञेय	दुर्ज्ञेय		
स्नान	स्नान	कुंग	कुंग	फ़ख	फ़ख़	त्याहिक	त्र्याहिक	उर्दू	उर्दू		
बुद्ध	बुद्ध	हूप	हूप	अग्ग्रास	अग्ग्रास	विद्युतशक्ति	विद्युतशक्ति	निर्द्वन्द्व	निर्द्वन्द्व		

## चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्गवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ।। अर्थात तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात निकास पद्धित होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यिंद एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागित जाते हैं जो ख़ुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो ख़ुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

## चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्भवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ ॥ अर्थात तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यृह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की याला करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यालाएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात निकास पद्धित होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागित जाते हैं जो ख़ुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो ख़ुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

### गुदगुदी | शायरी | टेक ज्ञान | Hinglish News | गेम्स | गरमा गरम | Travel | Deals | Property | चुनाव

सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके, मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में मोटी फिर अळल

स्वागत के दौरान राहुल के सामने लगे 'प्रियंका-प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

उप्र में अंधेरा दूर करने के लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध बच्चियों से दुष्कर्म सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके, मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के सामने लगे 'प्रियंका-प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

उप्र में अंधेरा दूर करने के लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

# 119 देशों के बच्चों ने UAE का राष्ट्रगान गाकर बनाया रिकॉर्ड

## केवल 6 सेकेंड में 'आउट ऑफ स्टॉक' हुआ जियाओमी रेडमी नोट

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लि-पकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हट्जें मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसे-सर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिप-कार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़े - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हुर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़े - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

# तीन मिररलेस कैमरे के साथ आया निकॉन

Publish Date:Mon, 01 Dec 2014 10:12 AM (IST) | Updated Date:Mon, 01 Dec 2014 11:35 AM (IST)

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमश: 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइ-एसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43.950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24.950 रुपये में उपलब्ध है।

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्य1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमश: 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्य्1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यु 1 दनिया का पहला वाटरप्रुफ और शॉकप्रुफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मुविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंटास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीड़ी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

बेंगलुरू। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंद्रबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

बेंगलुरू। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत सफलता है और शानदार

फोटो में देखें, क्या हुआ जब ग्रांड फैशन इंवेट में Bollywood Divas ने रैंप पर उतरकर बिखेरे जलवे

### गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवत: खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट।।

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान।।

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालों को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी किहए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झूँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर

## गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवत: खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी निद्यों में रेत और फूल फिलयाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करैं। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी किहए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झूँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को

उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं।।

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं।।

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसें भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वहीं झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसकों सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सूनने को बहत सी नाँह-नूह की और कहा - परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसें भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा -

Consonant spacing	पपहपवपवहवव	Rakar spacing	पपळ्रपवपवळ्रवव	पपद्वपवपवद्ववव
पपकपवपवकवव	पपक्रपवपवक्रवव		पपक्षपवपवक्षवव	पपद्धपवपवद्धवव
पपखपवपवखवव	पपख़पवपवख़वव	पपक्रपवपवक्रवव	पपञ्चपवपवञ्चवव	पपद्ध्यपवपवद्ध्यवव
पपगपवपवगवव	पपग़पवपवग़वव	पपञ्जपवपवञ्जवव		पपद्मपवपवद्मवव
पपघपवपवघवव	पपज़पवपवज़वव	पपग्रपवपवग्रवव	Conjunct spacing	पपद्भपवपवद्भवव
पपङ्पवपवङवव	पपड़पवपवड़वव	पपघ्रपवपवघ्रवव		पपद्दपवपवद्दवव
	पपढ़पवपवढ़वव	पपङ्गपवपवङ्गवव	पपक्तपवपवक्तवव	पपश्चपवपवश्चवव
чч <b>च</b> पवपवचवव	पपफ़पवपवफ़वव	पपच्चपवपवच्चवव	पपरुपवपवरुवव	पपन्मपवपवन्मवव
पपछपवपवछवव	पपयपवपवयवव	पपछ्रपवपवछ्रवव	पपरूपवपवरूवव	पपल्जपवपवल्जवव
पपजपवपवजवव	पपक्षपवपवक्षवव	पपञ्जपवपवज्रवव	पपङ्यपवपवङ्यवव	पपल्थपवपवल्थवव
पपझपवपवझवव	पपज्ञपवपवज्ञवव	पपझ्रपवपवझ्रवव	पपज्जपवपवज्जवव	पपल्भपवपवल्भवव
पपञपवपवञवव		पपञ्रपवपवञ्रवव	पपञ्थपवपवज्थवव	पपल्मपवपवल्मवव
पपटपवपवटवव	Vowel spacing	पपट्रपवपवट्रवव	पपज्यपवपवज्यवव	पपल्यपवपवल्यवव
पपठपवपवठवव	vower spacing	पपठ्रपवपवठ्रवव	पपज्सपवपवज्सवव	पपद्यपवपवद्यवव
पपडपवपवडवव	पपअपवपवअवव	पपड्रपवपवड्रवव	पपछ्यपवपवछ्यवव	पपद्ध्यपवपवद्ध्यवव
पपढपवपवढवव	पपऄपवपवऄवव	पपद्रपवपवद्रवव	पपट्यपवपवट्यवव	पपद्मपवपवद्मवव
पपणपवपवणवव	पपॲपवपवॲवव	पपण्रपवपवण्रवव	पपठ्यपवपवठ्यवव	पपष्टपवपवष्टवव
पपतपवपवतवव	पपइपवपवइवव	पपत्रपवपवत्रवव	पपड्यपवपवड्यवव	पपन्भपवपवन्भवव
पपथपवपवथवव	पपईपवपवईवव	पपथ्रपवपवथ्रवव	पपढ्यपवपवढ्यवव	पपष्ठपवपवष्ठवव
पपदपवपवदवव	पपउपवपवउवव	पपद्रपवपवद्रवव	पपट्टपवपवट्टवव	पपल्जपवपवल्जवव
पपधपवपवधवव	पपऊपवपवऊवव	पपभ्रपवपवभ्रवव	पपट्टपवपवट्टवव	
पपनपवपवनवव	पपएपवपवएवव	पपन्नपवपवन्नवव	पपठ्ठपवपवठ्ठवव	पपह्नपवपवह्नवव
पपपपवपवपवव	पपऐपवपवऐवव	पपप्रपवपवप्रवव	पपड्टपवपवड्टवव	पपह्नपवपवह्नवव
पपफपवपवफवव	पपऍपवपवऍवव	पपफ्रपवपवफ्रवव	पपड्डॅपवपवड्डॅवव	पपह्मपवपवह्मवव
पपबपवपवबवव	पपऎपवपवऎवव	पपब्रपवपवब्रवव	पपढूँपवपवढूँवव	पपह्यपवपवह्यवव
पपभपवपवभवव	पपआपवपवआवव	पपभ्रपवपवभ्रवव	पपत्तपवपवत्तवव	पपह्लपवपवह्नवव
पपमपवपवमवव	पपओपवपवओवव	पपम्रपवपवम्रवव	पपत्खपवपवत्खवव	पपह्नपवपवह्नवव
पपयपवपवयवव	पपऔपवपवऔवव	पपग्रपवपवग्रवव	पपत्थपवपवत्थवव	
पपरपवपवरवव	पपऋपवपवऋवव	पपरूपवपवरूवव	पपत्नपवपवत्नवव	U/Uu variant spacing
पपलपवपवलवव	पपऋपवपवऋवव	पपल्लपवपवल्लवव	पपत्सपवपवत्सवव	पपहुपवपवहुवव
पपळपवपवळवव	पपल्पवपवल्वव	पपत्रपवपवत्रवव	पपत्यपवपवत्यवव	पपहूपवपवहूवव
पपवपवपवववव	पपॡपवपवॡवव	पपश्रपवपवश्रवव	पपद्धपवपवद्धवव	पपहृपवपवहृवव
पपशपवपवशवव		पपष्रपवपवष्रवव	पपद्गपवपवद्गवव	पपहृपवपवहृवव
पपषपवपवषवव		पपस्रपवपवस्रवव	पपद्वपवपवद्ववव	पपह्रुपवपवह्रुवव
पपसपवपवसवव		पपह्रपवपवह्रवव	पपद्भपवपवद्भवव	पपहूपवपवहूवव
		וופידיוים	ार्थ्याचाचथ्रस्यय	1161111644

पपरुपवपवरुवव
पपरूपवपवरूवव
पपदुपवपवदुवव
पपदूपवपवदूवव
पपदुपवपवदुवव

Vowel sign spacing

पपपंपपरंपपकंपप पपपंपपरंपपकंपप पपपंपपरंपपकंपप पपपंपपरंपपकंपप पपपंपपरंपपकेपप पपपंपपरंपपकेंपप पपपंपपरंपपकेंपप पपपंपपरंपपकेंपप पपपंपपरंपपकेंपप पपपंपपरंपपकेंपप पपपंपपरंपपकेंपप पपपंपपरंपपकेंपप पपपंपपरंपपकेंपप पपपंपपरंपपकेंपप पपपंपपरंपपकेंपप

पपपापपरापपकापप पपपिपपरिपपकिपप पपपीपपरीपपकीपप पपपींपपरींपपकींपप पपपींपपरींपपकींपप पपपाँपपराँपपकाँपप पपपाँपपराँपपकाँपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपोंपपरोंपपकोंपप पपपौपपरौपपकौपप पपपौंपपरौंपपकौंपप पपपौंपपरौंपपकौंपप

पपपुपपरुपपकुपप पपपूपपरूपपकृपप पपपृपपरृपपकृपप पपपूपपरूपपकृपप पपपूपपरूपपकूपप पपपूपपरूपपकूपप पपपूपपरूपपकूपप

पपर्पपपर्पपर्कपप पपर्पपपर्रपपर्कपप पपर्पपपर्रपपर्कपप

पपपऽपवपववऽवव पप?पवपव?वव पपप:पवपवव:वव

पपट, पवट.

पपठ, पवठ.

पपड, पवड.

पपढ, पवढ.

पपण, पवण.

पपत, पवत.

पपथ, पवथ.

पपद, पवद.

पपध, पवध.

पपन, पवन.

पपप, पवप.

Numeral spacing	पपफ, पवफ.
००००१०१०११	पपब, पवब.
000000000000000000000000000000000000000	पपभ, पवभ.
००२०१०१२११	पपम, पवम.
0030808388	पपय, पवय.
0080808888	पपर, पवर.
००५०१०१५११	पपल, पवल.
००६०१०१६११	पपळ, पवळ.
0060808688	पपव, पवव.
००८०१०१८११	पपश, पवश.
000000000000000000000000000000000000000	पपष, पवष.
00/0/0////	पपस, पवस.
Letter-punct spacing	पपह, पवह.
Letter-puriet spacing	पपक़, पवक़.
पपक, पवक.	पपख़, पवख़.
पपख, पवख.	पपग़, पवग़.
पपग, पवग.	पपज़, पवज़.
पपघ, पवघ.	पपड़, पवड़.
पपङ, पवङ.	पपढ़, पवढ़.
पपच, पवच.	पपफ़, पवफ़.
पपछ, पवछ.	पपय़, पवय़.
पपज, पवज.	पपक्ष, पवक्ष.
पपझ, पवझ.	पपज्ञ, पवज्ञ.
पपञ, पवञ.	

पपअ, पवअ. पपअ, पवअ. पपडू, पवडू. पपॲ, पवॲ. पपडू, पवडू. पपड, पवड. पपढ़ू, पवढ़ू. पपई, पवई. पपद्ध, पवद्ध. पपउ, पवउ. पपद्ग, पवद्ग. पपऊ, पवऊ. पपद्ध, पवद्ध. पपए, पवए. पपद्ध, पवद्ध. पपऐ, पवऐ. पपद्व, पवद्व. पपऍ, पवऍ. पपद्ध, पवद्ध. पपऎ, पवऎ.

Khula - Semibold v. 1.001 पपआ, पवआ. पपद्द, पवद्द. पपओ, पवओ, पपष्ट, पवष्ट. पपऔ, पवऔ, पपन्भ, पवन्भ. पपऋ, पवऋ. पपष्ठ, पवष्ठ. पपऋ, पवऋ. पपल्ज, पवल्ज. पपल, पवल. पपह्न, पवह्न. पपल्, पवल्. पपह्न, पवह्न. पपह्ल, पवह्ल. पपह्न, पवह्न. पपङ्ग, पवङ्ग. पपछ, पवछ. पपह्, पवह्. पपटू, पवटू. पपहू, पवहू. पपठू, पवठू. पपह, पवह. पपडू, पवडू. पपह, पवह. पपद्र, पवद्र. पपह्र, पवह्र. पपद्र, पवद्र. पपह्र, पवह्र. पपरू, पवरू. पपरु, पवरु. पपह्र, पवह्र. पपरू, पवरू. पपळू, पवळू. पपद्, पवद्. पपदू, पवदू. पपक्त, पवक्त. पपद्, पवद्. पपरु, पवरु. पपरू, पवरू. पपट्ट, पवट्ट. पपकः पवकः पपट्ट, पवट्ट. पपखः पवखः पपठू, पवठू. पपगः पवगः

पपड; पवड:	पपॲ; पवॲ:	पपड्टु; पवड्टु:	पपघ। पवघ:	पपड़। पवड़:	पपह्न। पवह्न:	पपरू। पवरू:
पपढ; पवढ:	पपइ; पवइ:	पपड्डुं; पवड्डुं:	पपङ। पवङ:	पपढ़। पवढ़:	पपळ्र। पवळ्र:	पपदु। पवदुः
पपण; पवण:	पपई; पवई:	पपढूं; पवढूं:	पपच। पवच:	पपफ़। पवफ़:		पपदू। पवदू:
पपत; पवत:	पपउ; पवउ:	पपद्धः; पवद्धः	पपछ। पवछ:	पपय्र। पवयः	पपक्त। पवक्तः	पपदृ। पवदृः
पपथ; पवथ:	पपऊ; पवऊ:	पपद्ग; पवद्ग:	पपज। पवज:	पपक्ष। पवक्ष:	पपरु। पवरु:	
पपद; पवद:	पपए; पवए:	पपद्ध; पवद्ध:	पपझ। पवझ:	पपज्ञ। पवज्ञ:	पपरू। पवरू:	-
पपधः पवधः	पपऐ; पवऐ:	पपद्भ; पवद्भ:	पपञ। पवञ:		पपट्ट। पवट्ट:	पपक! पवक?
पपन; पवन:	पपऍ; पवऍ:	पपद्व; पवद्व:	पपट। पवट:	पपअ। पवअ:	पपट्ठ। पवट्ठः	पपख! पवख?
पपप; पवप:	पपऎ; पवऎ:	पपद्ध; पवद्ध:	पपठ। पवठ:	पपऄ। पवऄ:	पपठ्ठ। पवठ्ठः	पपग! पवग?
पपफ; पवफ:	पपआ; पवआ:	पपद्द; पवद्द:	पपड। पवड:	पपॲ। पवॲ:	पपडूँ। पवडूँ:	पपघ! पवघ?
पपब; पवब:	पपओ; पवओ:	पपष्ट; पवष्ट:	पपढ। पवढ:	पपइ। पवइ:	पपडू। पवडू:	पपङ! पवङ?
पपभ; पवभ:	पपऔ; पवऔ:	पपन्भ; पवन्भ:	पपण। पवण:	पपई। पवई:	पपढूँ। पवढूँ:	पपच! पवच?
पपम; पवम:	पपऋ; पवऋ:	पपष्ठ; पवष्ठ:	पपत। पवत:	पपउ। पवउ:	पपद्ध। पवद्धः	पपछ! पवछ?
पपय; पवय:	पपऋ; पवऋ:	पपल्जः; पवल्जः	पपथ। पवथ:	पपऊ। पवऊ:	पपद्ग। पवद्गः	पपज! पवज?
पपर; पवर:	पपलः; पवलः:	पपह्न; पवह्न:	पपद। पवद:	पपए। पवए:	पपद्व। पवद्व:	पपझ! पवझ?
पपल; पवल:	पपॡ; पवॡ:	पपह्न; पवह्न:	पपध। पवध:	पपऐ। पवऐ:	पपद्भ। पवद्भ:	पपञ! पवञ?
पपळ; पवळ:		पपह्न; पवह्न:	पपन। पवन:	पपऍ। पवऍ:	पपद्व। पवद्वः	पपट! पवट?
पपव; पवव:		पपह्न; पवह्न:	पपप। पवप:	पपऎ। पवऎ:	पपद्ध। पवद्धः	पपठ! पवठ?
पपश; पवश:	पपङ्गः, पवङ्गः		पपफ। पवफ:	पपआ। पवआ:	पपद्। पवद्दः	पपड! पवड?
पपषः; पवषः	पपछ्र; पवछ्र:	पपहु; पवहु:	पपब। पवब:	पपओ। पवओ:	पपष्ट। पवष्टः	पपढ! पवढ?
पपस; पवस:	पपट्र; पवट्र:	पपहूँ; पवहूँ:	पपभ। पवभ:	पपऔ। पवऔ:	पपन्भ। पवन्भः	पपण! पवण?
पपह; पवह:	पपठ्र; पवठ्र:	पपहें; पवहें:	पपम। पवम:	पपऋ। पवऋ:	पपष्ठ। पवष्ठ:	पपत! पवत?
पपक़; पवक़:	पपड्र; पवड्र:	पपह्ः, पवहृः	पपय। पवय:	पपऋ। पवऋ:	पपल्ज। पवल्जः	पपथ! पवथ?
पपख़; पवख़:	पपद्र; पवद्र:	पपहु; पवहु:	पपर। पवर:	पपल्। पवलः	पपह्न। पवह्न:	पपद! पवद?
पपग़; पवग़:	पपद्र; पवद्र:	पपहूँ; पवहूँ:	पपल। पवल:	पपॡ। पवॡ:	पपह्न। पवह्न:	पपध! पवध?
पपज़; पवज़:	पपर्; पवर्:	पपरुः; पवरुः:	पपळ। पवळ:		पपह्न। पवह्न:	पपन! पवन?
पपड़; पवड़:	पपह्न; पवह्न:	पपरू; पवरू:	पपव। पवव:		पपह्न। पवह्न:	पपप! पवप?
पपढ़; पवढ़:	पपळ्र; पवळ्र:	पपदु; पवदु:	पपश। पवश:	पपङ्ग। पवङ्गः		पपफ! पवफ?
पपफ़; पवफ़:	<del></del> .	पपदूः; पवदूः	पपष। पवष:	पपछ्। पवछ्रः	पपहु। पवहु:	पपब! पवब?
पपय़; पवय़:	पपक्त; पवक्त:	पपदृः पवदृः	पपस। पवस:	पपट्र। पवट्र:	पपहूँ। पवहूँ:	पपभ! पवभ?
पपक्ष; पवक्ष:	पपरु; पवरु:		पपह। पवह:	पपठ्र। पवठ्रः	पपह्नं। पवहः	पपम! पवम?
पपज्ञ; पवज्ञ:	पपरूः, पवरूः	-	पपक़। पवक़:	पपड्र। पवड्र:	पपहृ। पवहृ:	पपय! पवय?
	पपट्टः पवट्टः	पपक। पवक:	पपख़। पवख़:	पपद्र। पवद्र:	पपह्रु। पवह्रु:	पपर! पवर?
पपअ; पवअ:	पपट्ठ; पवट्ठ:	पपख। पवख:	पपग़। पवग़:	पपद्र। पवद्र:	पपहूँ। पवहूँ:	पपल! पवल?
पपऄ; पवऄ:	पपठ्ठ; पवठ्ठ:	पपग। पवग:	पपज़। पवज़:	पपर्। पवर्:	पपरु। पवरु:	पपळ! पवळ?

पपव! पवव?	पपङ्र! पवङ्र?		पपफ-फपव	पपआ्-आपव	पपद्-द्दपव	"डपवपड"
पपश! पवश?	पपछ्र! पवछ्र?	पपहु! पवहु?	पपब-बपव	पपओ-ओपव	पपष्ट-ष्टपव	"ढपवपढ"
पपष! पवष?	पपट्र! पवट्र?	पपहू! पवहू?	पपभ-भपव	पपऔ-औपव	पपन्भ-न्भपव	"णपवपण"
पपस! पवस?	पपठ्र! पवठ्र?	पपहृ! पवहृ?	पपम-मपव	पपऋ-ऋपव	पपष्ठ-ष्ठपव	"तपवपत"
पपह! पवह?	पपड्र! पवड्र?	पपहॄ! पवहॄ?	पपय-यपव	पपऋ-ऋपव	पपल्ज-ल्जपव	"थपवपथ"
पपक़! पवक़?	पपद्र! पवद्र?	पपह्नु! पवह्नु?	पपर-रपव	पपल-लपव	पपह्ल-ह्लपव	"दपवपद"
पपख़! पवख़?	पपद्र! पवद्र?	पपहूँ! पवहूँ?	पपल-लपव	पपॡ-ॡपव	पपह्न-ह्नपव	"धपवपध"
पपग़! पवग़?	पपरू! पवरू?	पपरु! पवरु?	पपळ-ळपव		पपह्ल-ह्लपव	"नपवपन"
पपज़! पवज़?	पपह्न! पवह्न?	पपरू! पवरू?	पपव-वपव		पपह्न-ह्नपव	"पपवपप"
पपड़! पवड़?	पपळ्! पवळ्?	पपदु! पवदु?	पपश-शपव	पपङ्र-ङ्रपव		"फपवपफ"
पपढ़! पवढ़?		पपदूं! पवदूं?	पपष-षपव	पपछ्र-छ्रपव	पपहु-हुपव	"बपवपब"
पपफ़! पवफ़?	पपक्त! पवक्त?	पपदृं! पवदृं?	पपस-सपव	पपट्र-ट्रपव	पपहूँ-हूँपव	"भपवपभ"
पपय़! पवय़?	पपरु! पवरु?		पपह-हपव	ччд-дча	पपह-हैंपव	"मपवपम"
पपक्ष! पवक्ष?	पपरू! पवरू?	-	पपक़-क़पव	पपड्र-ड्रपव	पपह्-हृपव	"यपवपय"
पपज्ञ! पवज्ञ?	पपट्ट! पवट्ट?	पपक-कपव	पपख़-ख़पव	पपद्र-द्रपव	पपह्र-ह्रुपव	"रपवपर"
	पपट्ट! पवट्ट?	पपख-खपव	पपग़-ग़पव	पपद्र-द्रपव	पपहूँ-हूँपव	"लपवपल"
पपअ! पवअ?	पपठ्ठ! पवठ्ठ?	पपग-गपव	पपज़-ज़पव	पपर्-रूपव	पपरु-रुपव	"ळपवपळ"
पपऄ! पवऄ?	पपड्ढं! पवड्ढं?	पपघ-घपव	पपड़-ड़पव	पपह्र-ह्रपव	पपरू-रूपव	"वपवपव"
पपॲ! पवॲ?	पपडूं! पवडूं?	पपङ-ङपव	पपढ़-ढ़पव	पपळ्-ळ्रपव	पपदु-दुपव	"शपवपश"
पपइ! पवइ?	पपढूं! पवढूं?	पपच-चपव	पपफ़-फ़पव	<del></del>	पपदू-दूपव	"षपवपष"
पपई! पवई?	पपद्धे! पवद्धे?	पपछ-छपव	पपय़-य़पव	पपक्त-क्तपव	पपदृ-दृपव	"सपवपस"
पपउ! पवउ?	पपद्ग! पवद्ग?	पपज-जपव	पपक्ष-क्षपव	पप्र-रूपव		"हपवपह"
पपऊ! पवऊ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपझ-झपव	पपज्ञ-ज्ञपव	чч <u>ж</u> -жча	-	"क़पवपक़"
पपए! पवए?	पपद्भ! पवद्भ?	पपञ-ञपव		पपट्ट-ट्टपव	"कपवपक"	"ख़पवपख़"
पपऐ! पवऐ?	पपद्व! पवद्व?	पपट-टपव	पपअ-अपव	पपट्ठ-ट्ठपव	"खपवपख"	"ग़पवपग़"
पपऍ! पवऍ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपठ-ठपव	पपऄ-ऄपव	पपठु-ठुपव	"गपवपग"	"ज़पवपज़"
पपऎ! पवऎ?	पपद्। पवद्द?	पपड-डपव	पपॲ-ऑपव	पपड्ड-ड्रपव	"घपवपघ"	"ड़पवपड़"
पपआ! पवआ?	पपष्ट! पवष्ट?	पपढ-ढपव	पपइ-इपव	पपडु-डुपव	"ङपवपङ"	"ढ़पवपढ़"
पपओ! पवओ?	पपन्भ! पवन्भ?	पपण-णपव	पपई-ईपव	पपढ़ु-ढ़ुपव	"चपवपच"	"फ़पवपफ़"
पपऔ! पवऔ?	पपष्ठ! पवष्ठ?	पपत-तपव	पपउ-उपव	पपद्ध-द्धपव	"छपवपछ"	"य़पवपय़"
पपऋ! पवऋ?	पपल्ज! पवल्ज?	पपथ-थपव	पपऊ-ऊपव	पपद्ग-द्गपव	"जपवपज"	"क्षपवपक्ष"
पपऋ! पवऋ?	पपह्न! पवह्न?	पपद-दपव	पपए-एपव	पपद्ध-द्धपव	"झपवपझ"	"ज्ञपवपज्ञ"
पपलृ! पवलृ?	पपह्नं! पवह्नं?	पपध-धपव	पपऐ-ऐपव	पपद्भ-द्भपव	"ञपवपञ"	
पपॡ! पवॡ?	पपह्न! पवह्न?	पपन-नपव	पपऍ-ऍवव	पपद्व-द्वपव	"टपवपट"	"अपवपअ"
· -	पपह्नं! पवह्नं?	पपप-पपव	पपऎ-ऎपव	पपद्ध-द्धपव	"ठपवपठ"	"ऄपवपऄ"

"2 <del>ĭ1-211</del> 2ĭ"	<del> </del>		li Vowel sign - base	<del>memeimen</del>
"ॲपवपॲ"	"डुपवपडु" ""	Num-punct spacing	ii vowei sigii - base	पपहिपपहिंपपर्हिपप
"इपवपइ"	"ढ्रुपवपढ्ढ" "	पवप ₹१०१ वपव	पपकिपपकिंपपर्किपप	पपक्षिपपक्षिंपपर्क्षिपप
"ईपवपई"	"द्धपवपद्ध"	पवप ₹२०१ वपव	पपखिपपखिंपपर्खिपप	पपज्ञिपपज्ञिंपपर्ज्ञिपप
"उपवपउ"	"द्गपवपद्ग"	पवप ₹३०१ वपव	पपगिपपगिंपपर्गिपप	
"ऊपवपऊ"	"द्वपवपद्व"	पवप ₹४०१ वपव	पपघिपपघिंपपर्घिपप	
"एपवपए"	"द्भपवपद्भ"	पवप ₹५०१ वपव	पपङिपपङिंपपर्ङिपप	
"ऐपवपऐ"	"द्वपवपद्व"		पपचिपपचिंपपर्चिपप	
"ऍपवपऍवव	"द्धपवपद्ध"	पवप ₹६०१ वपव	पपछिपपछिंपपर्छिपप	
"ऎपवपऎ"	"द्दपवपद्द"	पवप ₹७०१ वपव	पपजिपपजिंपपर्जिपप	
"आपवपआ"	"ष्टपवपष्ट"	पवप ₹८०१ वपव	पपझिपपझिंपपर्झिपप	
"ओपवपओ"	"भपवपभ"	पवप ₹९०१ वपव	पपञिपपञिंपपर्ञिपप	
"औपवपऔ"	"ष्ठपवपष्ठ"		पपटिपपटिंपपर्टिपप	
"ऋपवपऋ"	"ल्जपवपल्ज"	०००,०१०,०११	पपठिपपठिंपपर्ठिपप	
"ऋपवपऋ"	"ह्रपवपह्न"	००१,०१०,१११	पपडिपपडिंपपर्डिपप	
"लपवपल"	"ह्नपवपह्न"	००२,०१०,२११	पपढिपपढिंपपर्ढिपप	
"ॡंपवपॡं"	"ह्लंपवपह्लं"	००३,०१०,३११		
96	"ह्रपवपह्न"	००४,०१०,४११	पपणिपपणिंपपर्णिपप	
"ङ्रपवपङ्र"	(4 (4	००५,०१०,५११	पपतिपपतिंपपर्तिपप	
"छ्रपवपछ्र"	"हुपवपहु"	००६,०१०,६११	पपथिपपथिंपपर्थिपप	
"ट्रपवपट्र"	"हूपवपहू"	००७,०१०,७११	पपदिपपदिंपपर्दिपप	
"ठ्रपवपठ्र"	"हपवपह"	००८,०१०,८११	पपधिपपधिंपपर्धिपप	
"इपवपड्र"	"हृपवपहृ"	००९,०१०,९११	पपनिपपनिंपपर्निपप	
			पपपिपपपिंपपर्पिपप	
"द्रपवपद्र" "ट्राप्टार्य"	"हुपवपहु" "ट्राप्टा"	०००.०१०.०११	पपिकपपिकंपपर्किपप	
"द्रपवपद्र"	"हूपवपहू" "स्पनारू"	००१.०१०.१११	पपबिपपबिंपपर्बिपप	
"रूपवपरू"	"रुपवपरु"	००२.०१०.२११	पपभिपपभिंपपर्भिपप	
"ह्रपवपह्र" "	"रूपवपरू"	003.080.388	पपमिपपमिंपपर्मिपप	
"ळ्रपवपळ्र"	"दुपवपदु" "	००४.०१०.४११	पपयिपपयिंपपर्यिपप	
	"दूपवपदू"	००५.०१०.५११	पपरिपपरिंपपरिंपप	
"क्तपवपक्त"	"दृपवपदृ"	००६.०१०.६११	पपलिपपलिंपपर्लिपप	
"रुपवपरु"		006.080.688	पपळिपपळिंपपळिंपप	
"ऋपवपऋ"		००८.०१०.८११	पपविपपविंपपर्विपप	
"ट्टपवपट्ट"		000.000.000	पपशिपपशिंपपर्शिपप	
"द्रपवपट्ठ"		301,010,111	पपषिपपषिंपपर्षिपप	
"ठ्रपवपठ्ठ"			पपसिपपसिंपपर्सिपप	
"ड्रपवपड्ड"				

li Vowel sign	पपर्क्त्यिपप	पपर्ग्बिपप	पपङ्खींपप	पपछ्विपप	पपर्ट्रिपप	पपर्सिपप	पपर्झिपप
clusters	पपक्त्विपप	पपर्ग्भिपप	पपङ्गिपप	पपर्ज्किपप	पपर्ट्रीपप	पपर्त्मिपप	पपर्धिपप
पपर्क्किपप	पपर्क्विपप	पपर्ग्मिपप	पपङ्गीपप	पपर्ज्जिपप	पपर्ट्विपप	पपर्त्यिपप	पपर्द्रिपप
पपक्खिपप	पपक्स्टिपप	पपर्ग्यिपप	पपङ्घिपप	पपर्ज्झिपप	पपट्वींपप	पपर्त्रिपप	पपर्द्विपप
पपर्क्यिपप	पपक्स्डिंपप	पपर्ग्रिपप	पपङ्घींपप	पपर्ज्ञिपप	पपर्ट्विपप	पपर्ल्लिपप	पपर्दध्यिपप
पपर्क्चिपप	पपक्स्तिपप	पपर्ग्लिपप	पपर्ङ्चिपप	पपर्ज्तिपप	पपर्ट्रीपप	पपर्त्विपप	पपद्र्विपप
पपर्क्छिपप	पपक्स्पिपप	पपर्ग्विपप	पपर्ङ्क्षपप	पपर्ज्दिपप	पपर्व्रिपप	पपर्त्सिपप	पपर्द्ञ्यिपप
पपर्क्जिपप	पपक्स्प्रिपप	पपर्ग्सिपप	पपङ्क्रीपप	पपर्ज्निपप	पपर्वठ्यपप	पपत्क्यिपप	पपर्ध्किपप
पपर्क्झिपप	पपर्क्प्रिपप	पपर्ग्ध्यिपप	पपङ्क्रिपप	पपर्ज्बिपप	पपर्ड्डिपप	पपर्क्रिपप	पपर्ध्धिपप
पपर्क्टिपप	पपक्स्प्र्लपप	पपर्ग्धिपप	पपर्ड्मिपप	पपर्ज्मिपप	पपर्ड्डिपप	पपर्त्सिपप	पपर्ध्निपप
पपर्क्ठिपप	पपर्ख्खिपप	पपग्न्यिपप	पपर्ड्यिपप	पपर्ज्यिपप	पपर्ड्रिपप	पपर्त्र्ङ्जिपप	पपर्ध्यिपप
पपर्क्डिपप	पपर्ख्टिपप	पपग्भ्यिपप	पपर्ङ्रिपप	पपर्ज्ञिपप	पपर्ड्ड्यिपप	पपर्ल्बिपप	पपर्ध्रिपप
पपर्व्हिपप	पपर्ख्डिपप	पपर्ग्र्यिपप	पपर्च्किपप	पपर्ज्लिपप	पपर्ढ्विपप	पपर्ल्ब्रिपप	पपर्ध्लिपप
पपर्क्णिपप	पपर्ख्यिपप	पपग्म्यिपप	पपर्च्खिपप	पपर्ज्विपप	पपर्ढीपप	पपर्त्यिपप	पपर्ध्विपप
पपर्क्तिपप	पपर्ख्तिपप	पपग्र्ल्यिपप	पपर्च्चिपप	पपर्झ्किपप	पपर्द्विपप	पपर्त्प्रिपप	पपर्ध्सिपप
पपर्क्थिपप	पपर्ख्दिपप	पपर्घ्यिपप	पपर्च्टिपप	पपर्झ्गिपप	पपर्ढ्यिपप	पपर्ट्सिपप	पपर्न्किपप
पपर्क्टिपप	पपर्ख्निपप	पपर्घ्जिपप	पपर्च्छिपप	पपर्झ्घिपप	पपर्व्ढ्यिपप	पपर्त्म्यिपप	पपर्न्खिपप
पपर्क्निपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्टिपप	पपर्च्छिपप	पपर्झिपप	पपर्ण्टिपप	पपर्त्स्निपप	पपर्न्चिपप
पपर्क्पिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्विपप	पपर्च्छिपप	पपर्झ्तिपप	पपर्ण्टीपप	पपर्त्स्यिपप	पपर्म्छिपप
पपर्क्षिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्डिपप	पपर्च्णिपप	पपर्झ्निपप	पपर्ण्ठिपप	पपर्त्स्विपप	पपर्न्जिपप
पपर्क्बिपप	पपर्ख्रिपप	पपर्घ्णिपप	पपर्च्तिपप	पपर्झ्यिपप	पपर्ण्डिपप	पपि्रस्यिपप	पपर्म्झिपप
पपर्क्भिपप	पपर्ख्लिपप	पपर्घ्तिपप	पपर्च्थिपप	पपर्झिपप	पपर्ण्डिपप	पपर्थ्किपप	पपर्न्टिपप
पपर्क्मिपप	पपर्ख्विपप	पपर्घ्दिपप	पपर्च्दिपप	पपर्झ्लिपप	पपर्णिपप	पपर्थिपप	पपर्न्ठिपप
पपर्क्यिपप	पपर्ख्शिपप	पपर्घ्निपप	पपर्च्धिपप	पपर्झ्विपप	पपर्ण्तिपप	पपर्थ्मिपप	पपर्न्डिपप
पपर्क्रिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्विपप	पपर्जिपप	पपर्झ्मिपप	पपर्ण्यिपप	पपर्थ्यिपप	पपर्न्हिपप
पपर्क्लिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्मिपप	पपर्च्यिपप	पपर्ञ्चिपप	पपर्ण्रिपप	पपर्थ्रिपप	पपर्न्तिपप
पपर्क्विपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्यिपप	पपर्च्चिपप	पपर्ञ्जिपप	पपर्ण्विपप	पपर्थ्लिपप	पपर्स्थिपप
पपर्क्शिपप	पपर्ग्किपप	पपर्घ्रिपप	पपर्च्लिपप	पपर्ञ्शिपप	पपर्त्किपप	पपर्थ्विपप	पपर्न्दिपप
पपर्क्षिपप	पपर्गिपप	पपर्घ्लिपप	पपर्च्चिपप	पपर्ञ्चिपप	पपर्त्खिपप	पपर्थ्सिपप	पपर्स्थिपप
पपर्क्सिपप	पपर्ग्जिपप	पपर्घ्विपप	पपर्च्सिपप	पपञ्जिंपप	पपर्त्तिपप	पपर्द्गिपप	पपर्न्निपप
पपर्क्हिपप	पपर्ग्णिपप	पपर्घ्सिपप	पपर्चिपप	पपर्ट्ट्रिपप	पपर्स्थिपप	पपर्द्धिपप	पपर्म्पिपप
पपर्क्ळिपप	पपर्ग्तिपप	पपिट्यिपप	पपर्च्मिपप	पपर्ट्टीपप	पपर्लिपप	पपर्द्दिपप	पपर्म्भिपप
पपक्क्यिपप	पपर्ग्दिपप	पपर्ङ्किपप	पपर्च्यिपप	पपर्ट्रिपप	पपर्त्पिपप	पपर्द्धिपप	पपर्न्बिपप
पपर्क्त्रिपप	पपर्श्विपप	पपङ्र्कीपप	पपर्छ्यिपप	पपर्ट्वीपप	पपर्त्फिपप	पपर्द्धिपप	पपर्भिपप
	पपर्ग्निपप	पपङ्खिंपप	पपर्छ्रिपप	पपर्ट्यिपप	पपर्ल्बिपप	पपर्द्भिपप	पपर्मिपप

पपर्त्यिपप पपर्त्रिपप पपर्त्तिपप पपर्तिपप पप्राप्तिपप पप्राप्तिपप पप्राप्तिपप पप्राप्तिपप पप्राप्तिपप पप्राप्तिपप पप्राप्तिपप पप्राप्तिपप पप्राप्तिपप पप्राप्तिपप पप्राप्तिपप पप्राप्तिपप पप्राप्तिपप पप्राप्तिपप पप्राप्तिपप पप्राप्तिपप पप्राप्तिपप पप्राप्तिपप प्राप्तिप्तिप प्राप्तिपप प्राप्तिप्तिप प्राप्तिप्तिप प्राप्तिप्तिप प्राप्ति प्राप्तिप प्राप्तिप प्राप्तिप प्राप्तिप प्राप्तिप प्राप्ति प्राप	पपर्श्विपप पपर्जिपप	पपर्म्बिपप पपर्म्भिपप पपर्म्भिपप पपर्म्भिपप पपर्म्शिपप पपर्म्शिपप पपर्म्शिपप पपर्म्शिपप पपर्म्शिपप पपर्म्शिपप पपर्म्शिपप पपर्म्शिपप पपर्म्शिपप पपर्म्शिपप पपर्म्शिपप पपर्म्शिपप पपर्म्शिपप पपर्मिपप पप्रिप प्रि प प प प प प प प प प प प प प प प प प प	पपर्ल्थिपप पपर्ल्यिपप पपर्ल्यिपप पपर्ल्थिपप पपर्ल्थिपप पपर्ल्थिपप पपर्ल्थिपप पपर्ल्थिपप पपर्ल्थिपप पपर्ल्थिपप पपर्ल्थिपप पपर्ल्थिपप पपर्ल्थिपप पपर्श्विपप पपर्शिपप पपर्शिपप पपर्शिपप पपर्शिपप पपर्शिपप	पपस्जिपप पपस्ठिपप पपस्ठिपप पपस्डिपप पपस्डिपप पपस्डिपप पपस्किपप पपसिकिपप पपसिकिपप पपसिकिपप पपसिकिपप पपसिकिपप	पपह्लिंपप पपळ्विंपप पपळ्विंपप पपर्श्चिंपप पपर्श्चिंपप पपर्श्विंपप
पपर्खिपप	पपर्भ्विपप	पपर्ल्जिपप	पपर्श्विपप	पपर्ह्मिपप	
पपर्व्हिपप	पपर्भ्यिपप	पपर्ल्टिपप	पपर्शिपप	पपर्हम्यिपप	
पपर्णिपप	पपर्म्तिपप	पपर्ल्जिपप	पपर्श्चिपप	पपर्ह्मिपप	
पपर्प्तिपप	पपर्म्दिपप	पपर्ल्डिपप	पपर्स्किपप	पपर्ह्रिपप	
पपर्ष्यिपप	पपर्म्निपप	पपर्ल्डिपप	पपर्स्खिपप	पपर्ह्लिपप	
पपर्प्दिपप	पपर्म्पिपप	पपर्ल्तिपप	पपर्स्छिपप	पपर्ह्मिपप	

#### Half-to-base kerns

पपक्कपपक्खपपक्गपपक्घपपक्डपपक्चप पक्छपपक्जपपक्झपपक्ञपपक्टपपक्ठपपक्डप पक्ढपपक्णपपक्तपपक्थपपक्दपपक्थपपक्नप पक्नपपक्पपपक्फपपक्षपपक्मपपक्यप पक्रपपक्रपपक्लपपक्ळपपक्खपपक्वप पक्शपपक्षपपक्सपपक्हपपक्कपपक्खपपक्गप पक्जपपक्डपपक्ढपपक्फपपक्खपप

पपरक्रपपरख्रपपखापपरख्रपपरख्रप पर्ख्यपरख्रपपरख्रपपरख्रपपरख्रपपरख्रप पर्ख्यपरख्रपपरख्रपपरख्रपपरख्रपपरख्रप पर्ख्रपपरख्रपपरख्रपपरख्रपपरख्रपपरख्रप पर्ख्रपपर्ख्यपपर्ख्यपपरख्रपपरख्रपपरख्रप पर्ख्यपरख्रपपर्ख्यपपरख्रपपरख्रपपरख्रप पर्ख्यपरख्रपपरख्रपपरख्रपप

पपग्कपपग्खपपगगपपग्घपपग्डपपगचप पग्छपपगजपपग्झपपग्जपपगटपपग्ठपपग्डप पग्डपपग्णपपग्तपपग्थपपग्दपपग्धपपग्नप पग्नपपग्पपगक्षपपग्बपपग्भपपग्मपपग्यपपग्रप पग्सपपग्हपपग्कपपग्खपपग्गपपग्जपपग्डप पग्दपपग्फपपग्यपप पग्दपपग्फपपग्यपप

पपच्कपपच्खपपञापपघ्यपपच्छपपच्छप पच्छपपघ्जपपघ्झपपघ्जपपघ्टपपघ्ठपपघ्डप पच्टपपघ्णपपघ्तपपघ्थपपघ्दपपध्थपपञ्जप पञ्जपपघ्मपपघ्कपपघ्बपपघ्भपपघ्मपपघ्यप पञ्जपपघ्यपपघ्लपपघ्ळपपघ्ळपपघ्यप पद्भपपघ्यपपघ्सपपघ्हपपघ्कपपघ्खपपघ्मप पद्भपपघ्यपघ्टपपघ्कपपघ्यपप पपक्कपपच्खपपच्यपपच्छपपच्छप पच्छपपच्जपपच्झपपच्जपपच्टपपच्ठपपच्डप पच्ढपपच्णपपच्तपपच्थपपच्दपपच्धपपच्जप पच्जपपच्मपपच्कपपच्खपपच्यप पच्चपपच्यपपच्कपपच्ळपपच्यपपच्थाप पच्थपपच्सपपच्हपपच्कपपच्खपपच्याप पच्छपपच्सपपच्हपपच्कपप

पपछकपपछखपपछगपपछघपपछङपपछचप पछछपपछजपपछझपपछञपपछटपपछठप पछडपपछढपपछणपपछतपपछथपपछदप पछधपपछनपपछनपपछपपपछफपपछबप पछभपपछमपपछ्यपपछूपपछ्रपपछलप पछळपपछळपपछखपपछशपपछषपपछसप पछहपपछक्रपपछखपपछगपपछजपपछड़प पछढपपछफ़पपछखपप

पपज्कपपज्खपपज्गपपज्यपपज्झपपज्यप पज्छपपज्जपपज्झपपञ्चपपज्टपपज्ठपपज्झप पज्दपपज्णपपज्तपपञ्थपपज्दपपज्धपपज्नप पज्नपपज्पपपज्कपपज्खपपज्भपपज्यप पज्जपपज्रपपज्लपपज्ळपपज्ळपपज्यपपज्शप पज्यपपज्सपपज्हपपज्कपपज्खपपज्ञापपज्जप पज्डपपज्दपपज्कपपज्यपप

पपइकपपइखपपइगपपइघपपइङपपइचप पइछपपइजपपइझपपइञपपइटपपइठपपइडप पइढपपइणपपइतपपइथपपइदपपइधपपइनप पइनपपइमपपइम्पपइबपपइभपपइमपपइयप पझपपइसपपइलपपइळपपइळपपइवपपइशप पइषपपइसपपइहपपइकपपइखपपइगपपइजप पइषपपइसपपइसपपइसपप पपञ्कपपञ्खपपञ्गपपञ्घपपञ्डपपञ्चप पञ्छपपञ्जपपञ्झपपञ्जपपञ्चप पञ्चपपञ्गपपञ्कपपञ्चपपञ्चपपञ्मपपञ्चप पञ्जपपञ्मपपञ्कपपञ्चपपञ्मपपञ्चप पञ्जपपञ्सपपञ्कपपञ्कपपञ्चपपञ्शप पञ्चपपञ्सपपञ्हपपञ्कपपञ्खपपञ्जप पञ्डपपञ्कपपञ्कपपञ्चप

पपट्कपपट्खपपट्गपपट्घपपट्ङपपट्चप पट्छपपट्जपपट्झपपट्ञपपट्टप पट्ढपपट्णपपट्तपपट्थपपट्दपपट्धपपट्नप पट्नपपट्पपपट्फपपट्बपपट्भपपट्मपपट्चप पट्रपपट्रपपट्लपपट्ळपपट्ञपपट्वपपट्शप पट्षपपट्सपपट्हपपट्कपपट्खपपट्गपपट्जप पट्डपपट्झपपट्कपपट्खपपट्गपपट्जप पट्डपपट्डपपट्फपपट्यप

पपठ्कपपठ्खपपठ्गपपठ्घपपठ्ङपपठ्चप पठ्छपपठ्जपपठ्झपपठ्ञपपठ्टपपठ्ठपपठ्डप पठ्ढपपठ्णपपठ्तपपठ्थपपठ्दपपठ्धपपठ्नप पठ्नपपठ्पपपठ्फपपठ्बपपठ्भपपठ्मपपठ्यप पठ्मपठ्सपपठ्लपपठ्ळपपठ्ळपपठ्नपपठ्शप पठ्षपपठ्सपपठ्हपपठ्कपपठ्खपपठ्गपपठ्जप पठ्डपपठ्ढपपठ्फपपठ्

पपड्कपपड्खपपड्गपपड्घपपड्डपपड्चप पड्छपपड्जपपड्झपपड्ञपपड्टपपड्ठपपड्डप पड्डपपड्णपपड्तपपड्थपपड्दपपड्थपपड्नप पड्नपपड्पपपड्फपपड्बपपड्भपपड्मपपड्यप पड्नपपड्रपपड्लपपड्ळपपड्ळपपड्वपपड्शप पड्षपपड्सपपड्हपपड्ळपपड्खपपड्गपपड्जप पड्डपपड्लपपड्सपपड्सपप

पपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्घपपढ्डपपढ्चप पढ्छपपढ्जपपढ्झपपढ्ञपपढ्टपपढ्ठपपढ्डप पढ्ढपपढ्णपपढ्तपपढ्थपपढ्दपपढ्धपपढ्नप पढ्नपपढ्णपपढ्कपपढ्बपपढ्भपपढ्मपपढ्यप पढ्नपपढ्रपपढ्कपपढ्ळपपढ्मपढ्शप पढ्षपपढ्सपपढ्हपपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्जप पढ्षपपढ्सपपढ्हपपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्जप पढ्डपपढुद्रपपढ्फपपढ्यपप

पपण्कपपण्खपपण्गपपण्डपपण्डपपण्चप पण्डपपण्जपपण्झपपण्ञपपण्डप पण्डपपण्जपपण्कपपण्डपपण्डप पण्नपपण्पपण्कपपण्डपपण्ञपपण्डप पण्नपपण्सपपण्हपपण्ञपपण्ञप पण्नपपण्सपपण्हपपण्ञपपण्ञप पण्डपपण्डपपण्कपपण्ञप पण्डपपण्डपपण्कपपण्यप पण्डपपण्डपपण्कपपण्यप

पपत्कपपत्खपपत्गपपत्खपपत्ङपपत्चपपत्छप पत्जपपत्झपपत्ञपपत्टपपत्ठपपत्डपपत्खपपत्णप पत्तपपत्थपपत्दपपत्थपपत्नपपत्नपपत्पपत्भप पत्बपपत्भपपत्मपपत्यपपत्रपपत्रपपत्लपपत्ळप पत्ळपपत्वपपत्शपपत्सपपत्सपपत्हपपत्कपपत्खप पतापपत्नपपत्इपपत्कपपत्सपप

पपद्कपपद्खपपद्गपद्झपपद्झपपद्चप पद्छपपद्जपपद्झपपद्ञपपद्टपपद्ठप पद्डपपद्ठपपद्णपपद्तपपद्थपपद्दप पद्नपपद्नपपद्पपपद्फपपद्वपपद्भपद्मप पद्नपपद्नपपद्भपपद्कपपद्छपपद्य पद्शपपद्षपपद्सपपद्हपपद्कपपद्खप पद्शपपद्जपपद्डपपद्कपपद्खप पद्गपपद्जपपद्डपपद्कपपद्खप

पपध्कपपध्खपपशापपध्यपपध्हपपध्चप पध्छपपध्जपपध्झपपध्जपपध्टपपध्ठपपध्हप पध्नपपश्चपपध्मपपध्मपपध्मपप्यप पभ्नपपश्मपपध्मपपध्कपपध्लपप्यप पभ्रपपध्सपपध्हपपध्कपपध्खपपश्चपपश्चप पष्मपपध्सपपध्हपपध्कपपध्खपपश्चपप्रापपद्मप पध्हपपध्लपप्रमप्

पपन्कपपन्खपपन्गपपन्धपपन्डपपन्छप पन्जपपन्झपपन्ञपपन्टपपन्ठपपन्डपप पन्णपपन्तपपन्थपपन्दपपन्थपपन्नपपन्नपपन्पप पन्फपपन्बपपन्भपपन्यपपन्नपपन्त्रपपन्लप पन्ळपपन्ळपपन्वपपन्शपपन्थपपन्सपपन्हपपन्कप पन्खपपन्गपपन्जपपन्डपपन्द्रपपन्कप

पपन्कपपन्खपपन्गपपन्धपपन्डपपन्चपपन्छप पन्जपपन्झपपन्ञपपन्टपपन्ठपपन्डपपन्दप पन्णपपन्तपपन्थपपन्दपपन्थपपन्नपपन्नपपन्य पपन्फपपन्बपपन्भपपन्मपपन्यपपन्चपपन्नपपन्नप पन्ळपपन्ळपपन्वपपन्शपपन्सपपन्सपपन्हपपन्कप पन्खपपन्गपपन्जपपन्डपपन्दपपन्सपपन्यपप

पपप्कपपप्खपपपापपध्यपपञ्चपपच्चपपछ्जप पप्जपपञ्चपपप्जपपप्टपपप्ठपपप्डपपप्दपपण्णप पप्जपपध्यपप्दपपध्यपपप्रपप्नपप्पपप्कप पप्जपपप्वपपध्यपपप्रपप्रपप्रपप्कपपप्कप पप्जपपप्वपप्शपपष्कपपप्सपप्रपप्कपपप्खप पणापप्जपप्डपपप्डपपप्कपपप्यपप पपम्कपपम्खपपम्गपपम्थपपम्झपपम्बप पम्छपपम्जपपम्झपपम्ञपपम्टपपम्ठपपम्झप पम्दपपम्णपपम्तपपम्थपपम्दपपम्थपपम्नप पम्नपपम्पपपम्भपपम्बपपम्भपपम्मपपम्यप प्रमपपम्रपपम्लपपम्ळपपम्ळपपम्वपपम्शप पम्भपपम्सपपम्हपपम्कपपम्खपपम्गपप्रजप पम्हपपम्दपपम्भपपम्यप

पपभ्कपपभ्खपपभापपभ्यपपभ्रतपभ्यपपभ्यपपभ्यप पभ्जपपभ्रापपभ्यपपभ्यपपभ्यपपभ्यपपभ्रप पभ्रापपभ्रपपभ्रवपपभ्यपपभ्रप पभ्रपपभ्रपपभ्रवपपभ्यपपभ्रप पभ्रपपभ्रपपभ्रवपपभ्रयपभ्रप पभ्रपपभ्रपपभ्रवपपभ्रयपभ्रापपभ्रप पभ्रपपभ्रपपभ्रवपपभ्रयपपभ्रप पभ्रपपभ्रपपभ्रयप

पपम्कपपम्खपपम्गपपम्घपपम्ङपपम्चपपम्छप पम्जपपम्झपपम्ञपपम्दपपम्छपपम्डपपम्दप पम्णपपम्तपपम्थपपम्दपपम्धपपम्नपपम्नपपम्मप पम्कपपम्ळपपम्वपपम्शपपम्थपपम्रपपम्हप पम्कपपम्खपपम्गपपम्जपपम्हपपम्कपपम्सपपम्हप पम्कपपम्खपपमापपम्जपपम्हपपम्कप

पपर्कपपर्खपपर्गपपर्घपपर्छपपर्चपपर्छपपर्जप पर्झपपर्ञपपर्टपपर्ठपपर्डपपर्वपपर्गपपर्तपपर्थप पर्दपपर्धपपर्नपपर्नपपर्पपपर्भपपर्मप पर्यपपर्रपपर्रपपर्लपपर्ळपपर्छपपर्वपपर्शप पर्षपपर्सपपर्हपपर्क्षपपर्खपपर्गपपर्जपपर्डपपर्वप पर्फपपर्यपप

पपक्कपपत्खपपञापपश्चपपङ्गपपच्चपपर्छप पन्जपपद्भपपञ्जपपन्टपपन्ठपपद्भपपन्कप पन्वपपश्चपपन्यपप्रूपपत्रपपन्लपपञ्कप पन्छपपन्वपपश्चपपश्चपपत्सपपन्हपपन्कपपत्खप पग्गपपन्जपपद्भपपन्हपपन्कपपत्खप

पपल्कपपल्खपपल्गपपल्घपपल्डपपल्चपपल्छप पल्जपपल्झपपल्ञपपल्टपपल्ठपपल्डपपल्खप पल्णपपल्तपपल्थपपल्दपपल्धपपल्नप पल्पपपल्फपपल्बपपल्भपपल्मपपल्यपपल्लप पल्सपपल्कपपल्ळपपल्वपपल्शपपल्थप पल्सपपल्हपपल्कपपल्खपपल्गपपल्जपपल्डप पल्सपपल्हपपल्कपपल्खपपलापपल्जपपल्डप पल्ढपपल्फ़पपल्यपप पपळकपपळखपपळगपपळघपपळडपपळठप पळछपपळजपपळझपपळञपपळठप पळडपपळढपपळणपपळतपपळथपपळदप पळधपपळनपपळनपपळपपपळफपपळबप पळभपपळनपपळयपपळूपपळऱपपळलपपळळप पळळपपळवपपळशपपळषपपळसपपळहप पळकपपळखपपळगपपळजपपळडप पळकपपळखपपळग्रपप

पपळकपपळखपपळगपपळघपपळङपपळचप पळछपपळजपपळझपपळञपपळटपपळठप पळडपपळढपपळणपपळतपपळथपपळदप पळधपपळनपपळनपपळपपपळभपपळबप पळभपपळमपपळयपपळपपळपपळलप पळळपपळअपपळवपपळशपपळषपपळसप पळहपपळकपपळखपपळग्रापपळजपपळइप पळढपपळफपपळयप

पपश्कपपश्खपपश्गपपश्चपपश्डपपश्चपपश्छप पश्जपपश्झपपश्ञपपश्टपपश्ठपपश्डपपश्चप पश्णपपश्तपपश्थपपश्दपपश्धपपश्नप पश्पपश्कपपश्चपपश्भपपश्मपपश्यपपश्रप पश्रपपश्लपपश्ळपपश्ळपपश्चपपश्शपपश्षप पश्सपपश्हपपश्कपपश्खपपश्गपपश्जपपश्डप पश्चपपश्कपपश्यपप पपक्कपपष्खपपषापपष्घपपष्डःपपष्चपपष्ठप पष्जपपष्यपपष्पपपष्यपपष्ठपपष्कपपष्कप पष्जपपष्यपपष्पपपष्यपपष्रपपष्तपपष्कप पष्जपपष्यपपष्पपपष्यपपष्रपपष्तपपष्कप पष्खपपष्पपप्रवेषपष्ठपपष्कपपष्कप पष्खपपषापप्रजपपष्ठपपष्कपपष्कप पष्खपपा

पपस्कपपस्खपपस्गपपस्घपपस्ङपपस्चप पस्छपपस्जपपस्झपपस्ञपपस्टपपस्ठपपस्डप पस्डपपस्णपपस्तपपस्थपपस्दपपस्थपपस्नप पस्नपपस्पपपस्कपपस्बपपस्भपपस्मपपस्यप पस्नपपस्तपपस्लपपस्ळपपस्ळपपस्वपपस्शप पस्भपपस्सपपस्हपपस्कपपस्खपपस्गपपस्जप पस्डपपस्डपपस्कपपस्यपप

पपह्कपपह्खपपह्मपपह्चपपह्डपपह्डपपह्चपपह्खप पह्जपपह्झपपह्ञपपह्टपपह्टपपह्डपपह्डप पह्मपपह्मपपह्थपपह्दपपह्थपपह्मपपह्मप पट्मपपह्बपपह्भपपह्मपपह्मपपह्मप पट्कपपह्ळपपह्मपपह्भपपह्मपपह्मप पट्कपपह्खपपह्मपपह्जपपह्मपपह्सप पट्कपपह्खपपट्मपपह्जपपह्डप पट्मपपह्खपप

पपक्ष्कपपक्ष्यपपक्ष्मपपक्ष्यपपक्ष्यपपक्ष्चप पक्ष्णपक्ष्जपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्टपपक्ष्ठपपक्ष्मप पक्ष्यपपक्ष्मपपक्षमपपक्ष्मपपक्षमपपक्षमपपक्षमपपक्षमपपक्षमपपक्षमपपक्षमपपक्षमपपक्षमपपक्षमपपक्षमप

पपक्कपपक्खपपक्रापपक्चपपक्छपपक्चप पक्छपपक्जपपक्झपपक्ञपपक्टपपक्ठपपक्डप पक्ढपपक्रपपक्तपपक्थपपक्दपपक्थपपक्नपपक्पप पक्कपपक्षपपक्भपपक्मपप पपक्यपपक्लपपक्ळप पक्षपवपपक्शपप पपक्षपपक्सपपक्हपप

#### less common half-forms

पपस्कपपस्खपपरगपपस्चपपस्कपपस्चपपस्छप परजपपस्झपपरञपपस्टपपस्ठपपस्डपपस्दप परगपपस्तपपरथपपस्दपपरथपपरनपपरगप परमपपरबपपरभपपरमपप पपस्यपपस्तप परळपपरगपवपपरशपप पपरशपपरसपपस्तपप

पपद्धकपपद्धखपपद्धगपपद्धघपपद्धङपपद्धचपपद्धछप पद्धजपपद्धझपपद्धञपपद्धटपपद्धठपपद्धडपपद्धवप पद्धणपपद्धतपपद्धथपपद्धदपपद्धथपपद्धनपपद्धपप पद्धकपपद्धबपपद्धभपपद्धमपप पपद्धयपपद्धलप पद्धळपपद्धपपवपपद्धशपप पपद्धबपपद्धसपपद्धहपप

पपद्कपपद्खपपद्गपपद्घपपद्ङपपद्चपपद्छप पद्जपपद्झपपद्ञपपद्टपपद्ठपपद्डपपद्ढप पद्गपपद्वपपद्थपपद्दपपद्धपपद्वपप पद्मपपद्वपपद्भपपद्मपप पपद्यपपद्लप पद्द्यपद्सपवपपद्शपप पपद्वपपद्सपपद्हपप

पपक्रकपपक्रखपपक्रगपपक्रघपपक्रङपपक्रचप पक्रछपपक्रजपपक्रझपपक्रञपपक्रटपपक्रटप पक्रडपपक्रटपपक्रणपपक्रतपपक्रथपपक्रदप पक्रधपपक्रनपपक्रपपपक्रफपपक्रबपपक्रभपपक्रमप पपक्रयपपक्रलपपक्रळपपक्रपपवपपक्रशप पपक्रयपपक्रसपपक्रहपप

पपञ्कपपञ्जपपञ्जापपञ्चपपञ्जपपञ्जप पञ्छपपञ्जपपञ्ज्ञपपञ्जपपञ्जपपञ्चप पञ्जपपञ्जपपञ्जापपञ्जपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्जपपञ्जपपञ्जपपञ्जपपञ्चप पञ्जपपञ्जपपञ्जपपञ्जपपञ्जपप पञ्जपपञ्जसपपञ्जसप पप्रक्रपपग्र्वपपग्रापपग्र्वपप्रन्वपपग्र्वप प्रज्ञपपग्र्वपपग्र्वपपग्र्वपपग्र्वप प्रग्रापपग्र्वपपग्र्वपपग्र्वपपग्र्वप पग्र्मपपग्र्वपपग्र्भपपग्रमपप पपग्र्वपपग्र्वप पग्र्मपवपपश्रापप पपग्र्वपपग्रमपप

पपञ्कपपञ्चपपञ्चापपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपवपपञ्चापप पपञ्चपपञ्चपप

पपज्रमपज्रखपपज्रापपज्रापपज्रापपज्रथप पज्रापपज्रापपज्रापपज्रपपज्रपपज्रपपज्रप पज्रापपज्रापपज्रथपपज्रपपज्रपप पज्रमपपज्रापपज्रभपपज्रमपपज्रपप पज्रमपपज्रापपज्रथपपज्रथपपज्रपप

पपइक्रपपइख्रपपइग्रापपइघ्रपपइङ्ग्पपइच्यप पइछ्रपपइज्जपपइझ्रपपइञ्जपपइट्रपपइठपपइह्रप पइद्यपपइग्गपपइत्रपपइथ्रपपइन्नप पइम्रपपइक्रपपइश्रपपइभ्रपप पपइयप पइल्रपपइळ्यपइभ्रपपदश्रापपइश्रपपइसप पइह्रपप

पपञ्कपपञ्खपपञ्चापपञ्चापपञ्चप पञ्छपपञ्जपपञ्चापपञ्चापपञ्चप पञ्चपपञ्चपपञ्चापपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्मपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चापप पपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चापप पपञ्चपपञ्चप पञ्चपप पपण्कपपण्खपपणापपण्ठपपण्डपपण्डपपण्छप पण्जपपण्डपपण्ठपपण्डपपण्डप पण्णपपण्जपपण्थपपण्डपपण्जप पण्कपपण्जपपण्भपपण्मपप पपण्यपपण्जप पण्ळपपण्णपवपपण्शपप पपण्यपपण्जप

पपःकपपःखपपत्रापपश्चपपञ्चपपश्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपः पञ्जपपश्चपपञ्चपपश्चपपञ्चपपञ्मपपञ्चप पञ्चपपञ्चपपः पञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपः पञ्चपपञ्चपपञ्चपपः

पप्रक्रपपश्चपपश्चापपश्चपपश्चपपश्चप पश्जपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चपपश्चप पश्णपपश्चपपश्थपपश्चपपश्चपपश्चप पश्मपपश्चपपश्भपपश्मपप पपश्यपपश्चप पश्चपपश्मपवपपश्शपप पपश्यपपश्चपपश्चपप

पपध्कपपध्खपपध्रापपध्रयपध्रुवपपध्रुवप पध्र्जपपध्र्मपपध्र्जपपध्रुवपपध्रुवपपध्रुवप पध्र्मपपध्र्मपपध्र्मपपध्रमपप्र्मप पध्र्मपपध्र्मपपध्रमपप्रमपप्रमपप्रसपपध्र्मप पध्र्मपपध्रमपप्रभपपध्रमपप्रसपपध्रूपप

पपत्कपपत्खपपत्रापपत्थपपत्कपपत्वपपत्छप पत्जपपत्कपपत्ञपपत्वपपत्वपपत्वप पत्रापपत्नपपत्थपपत्वपपत्थपपत्नपपत्मपप्रकप पत्वपपत्भपपत्मपप पपत्यपपत्नपपत्वपपत्मप वपपत्थपप पपत्मपपत्सपपत्वपप

पप्रक्रपप्रखपप्रापप्रयपप्रस्पप्रसपप्रथप प्रजपप्रसपप्रजपप्रटपप्रजपप्रसपप्रसपप्रणप प्रतपप्रथपप्रदपप्रथपप्रनपप्रपप्रमपप्रसप प्रभपप्रमपप पप्रयपप्रलपप्रजपप्रप्रपय प्रशपप पप्रभपप्रसपप्रहपप

पपप्रकपपप्रखपपप्रगपपप्रधपपप्रङपपप्रचप पप्रखपपप्रजपपप्रझपपप्रञपपप्रटपपप्रठप पप्रडपपप्रखपपप्रणपपप्रतपपप्रथपपप्रदपपप्रथप पप्रनपपप्रपपपप्रफपपप्रबपपप्रभपपप्रमपप पपप्रयपपप्रलपपप्रखपपप्रपपवपपप्रशपप पपप्रसपपप्रसपपप्रहपप